Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

5. राष्ट्र निर्माण में शिक्षा पद्धति के बदलते स्वरुप: एक अध्ययन

डॉ. अनुपम कुमार राय
सहायक प्रोफ़ेसर
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी भिलाई, छ.ग.
dr.anupamrai25@gmail.com

सारांश

शिक्षा राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसे प्रगति की आधारशिला और एक सुसंगत और एकीकृत समाज को बढ़ावा देने का साधन माना जाता है।राष्ट्र निर्माण में शिक्षा की पूरी क्षमता का दोहन करने के लिए, सरकारों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रणालियों में निवेश करना महत्वपूर्ण है जो सामाजिक-आर्थिक स्थिति या भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी के लिए सुलभ हो। इसके अतिरिक्त, एक ऐसा पाठ्यक्रम जो देश के मूल्यों और आकांक्षाओं को दर्शाता है और आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ावा देता है, सक्रिय और लगे हुए नागरिकों को पोषित करने के लिए आवश्यक है जो राष्ट्र की प्रगति में सार्थक योगदान दे सकते हैं। राष्ट्र-निर्माण एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसे सरकारें अन्य देशों में राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा और सामाजिक संस्थाओं को विकसित करने के लिए करती हैं - विशेष रूप से उन देशों में जो संघर्ष से उभर रहे हैं। राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। वे जो काम करते हैं और जो विचार सामने लाते हैं, वे देश को सफलता की राह पर ले जाएंगे। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के बावजूद, भारत अभी भी आर्थिक सफलता हासिल करने में पीछे है, जो दुनिया में अपनी पहचान बनाने में मदद करेगी।

शब्द कुंजी : राष्ट्र निर्माण, शिक्षा पद्धति, शिक्षा पद्धति के बदलते स्वरुप

राष्ट्र निर्माण: राष्ट्र निर्माण से तात्पर्य एक ऐसा प्रक्रिया है जिसमें एक नए राष्ट्र का गठन किया जाता है या मौजूदा राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक संरचना को पुनर्गठित किया जाता है। इसमें विभिन्न तत्व शामिल होते हैं जैसे कि

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

राजनीतिक संस्थाओं का निर्माण, सामाजिक एकता और संस्कृति को मजबूत करना, कानूनी ढांचे का निर्माण, और आर्थिक विकास की योजनाओं को लागू करना।

साधारण शब्दों में, राष्ट्र निर्माण एक व्यापक और संगठित प्रयास होता है जो एक देश की पहचान, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ाने के लिए किया जाता है। यह प्रक्रिया जनसंख्या, भूगोल, संस्कृति, और ऐतिहासिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए की जाती है।

राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा की पद्धति में बदलाव समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को दर्शाता है और उसकी दिशा निर्धारित करता है।

प्रारंभिक शिक्षा: प्रारंभिक शिक्षा का उद्देश्य मूलभूत ज्ञान और कौशल प्रदान करना है। इसके माध्यम से बच्चों को पढ़ाई, लेखन, गणना और सामाजिक मूल्य सिखाए जाते हैं, जो भविष्य में उनके समग्र विकास के लिए आधार तैयार करते हैं।

माध्यमिक शिक्षा: माध्यमिक शिक्षा में छात्रों को विशिष्ट विषयों में गहराई से ज्ञान प्रदान किया जाता है, जो उन्हें विशेष क्षेत्रों में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए तैयार करता है। यह पद्धति व्यक्तिगत रुचियों और कैरियर विकल्पों के आधार पर पाठ्यक्रम को अनुकूलित करने की दिशा में बदल रही है।

उच्च शिक्षा: उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार पर जोर दिया जाता है। यहाँ पर छात्रों को गहन अध्ययन और विश्लेषणात्मक क्षमताओं को विकसित करने का अवसर मिलता है, जो राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।

प्रौद्योगिकी और डिजिटल शिक्षा: आधुनिक समय में, प्रौद्योगिकी और डिजिटल उपकरण शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऑनलाइन कक्षाएं, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल संसाधन शिक्षा की पहुँच को व्यापक बना रहे हैं और छात्रों के लिए नई संभावनाएँ उत्पन्न कर रहे हैं।

सामाजिक और आर्थिक बदलाव: शिक्षा पद्धति के बदलते स्वरूप सामाजिक और आर्थिक बदलावों को भी दर्शाते हैं। शिक्षा अब केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समावेश, नागरिक जिम्मेदारी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भागीदारी को भी प्रोत्साहित करती है। इन परिवर्तनों के माध्यम से, शिक्षा राष्ट्र के निर्माण में एक

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करती है, जो नागरिकों को सशक्त बनाती है और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में विकास को प्रेरित करती है।

मानव संसाधन विकास: शिक्षा व्यक्तिगत क्षमताओं को विकसित करती है, जिससे नागरिकों की उत्पादकता और सृजनात्मकता में वृद्धि होती है। यह विशेष रूप से युवा पीढ़ी को रोजगार के अवसरों के लिए तैयार करती है और राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है।

स्वास्थ्य और जीवन गुणवत्ता: शिक्षा स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और जागरूकता को फैलाती है, जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है। शिक्षित लोग स्वस्थ जीवनशैली अपनाते हैं और समाज में स्वास्थ्य सुधार की दिशा में योगदान करते हैं।

आर्थिक अवसर और सामाजिक समानता: शिक्षा आर्थिक अवसरों को बढ़ाती है और सामाजिक असमानता को कम करने में मदद करती है। यह गरीब और कमजोर वर्गों को भी उन्नति के अवसर प्रदान करती है, जिससे सामाजिक न्याय को प्रोत्साहन मिलता है।

नागरिक जिम्मेदारी: शिक्षा नागरिकों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग बनाती है। इससे वे सरकारी नीतियों और प्रक्रियाओं के प्रति जागरूक होते हैं और समाज में सक्रिय भागीदारी करते हैं।

आविष्कार और अनुसंधान: शिक्षा अनुसंधान और आविष्कार को प्रोत्साहित करती है, जो सामाजिक और तकनीकी समस्याओं का समाधान करने में सहायक होती है। यह वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति में योगदान करती है।

सांस्कृतिक विकास: शिक्षा सांस्कृतिक विविधता और धरोहर को समझने और संरक्षित करने में मदद करती है। यह विभिन्न सांस्कृतिक दृष्टिकोणों को अपनाने और समझने के लिए प्रोत्साहित करती है।

इन सभी पहलुओं से स्पष्ट होता है कि शिक्षा पद्धति राष्ट्र के समग्र विकास और मजबूती के लिए एक आधारभूत स्तंभ है। इसे लगातार सुधारने और उसे समावेशी बनाने की आवश्यकता है ताकि सभी नागरिकों को समान अवसर मिल सकें और राष्ट्र का समग्र विकास संभव हो सके।

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

आंकड़े बताते हैं कि आज स्वराज्य प्राप्ति के बाद भी देश में अभिक्रमहीन लोगों का वर्ग बढ़ रहा है, जो केवल दास वृत्ति से हुक्म मान कर चल सकते हैं, जिनमें स्वयं कोई प्रेरणा नहीं, कोई पहल करने की वृत्ति नहीं। इस ह्रास को रोकने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। नयी तालीम से ही इसकी आशा है।

ग्राम शिक्षा के अंतर्गत बालकसे लेकर वृद्ध तक आते हैं। जिस प्रकार प्रति दिन खाया जाता है, प्रतिक्षण सांस ली जाती है, उसी तरह प्रतिदिन सुबह के पठन-वर्ग और शाम के श्रवण-वर्ग में ज्ञान-चर्चा निरंतर चलेगी और हर क्षण काम करते हुए नया सीखने की तैयारी रहेगी। ग्राम शिक्षा के लिए अच्छा हो कि शिक्षक ग्राम का ही हो। वह ग्राम की आवश्यकताओं को समझें और जीवन के मिशन के रूप में उनके हल के निमित्त ऐसा शिक्षण दे कि वह जीवन पर्यन्त काम आए। वह केवल जीविका के लिए न हो।

हिंदू काल में शिक्षा की व्यवस्था-

ईसा की चतुर्थ शताब्दी-गुप्तकाल में हम नालंदा और तक्षशिला के विद्यापीठ का वर्णन पाते हैं। जिनमें दूर-दूर देशों से विद्यार्थी विद्याध्ययन के निमित्त आते थे। यहाँ विद्यार्थियों के निवास की भी समुचित व्यवस्था रहती थी। विद्यार्थियों को अपने छात्र जीवन में किसी प्रकार का शुल्क नहीं देना पड़ता था। तभी हम गर्व के साथ कहते थे-

'एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।'

"इस देश में उत्पन्न होने वाले अग्रजन्मा ब्राह्मणों ने पृथ्वी के सब मानव-समुदायों को अपना आचरण सिखाया, मानवता की शिक्षा दी।" इस समय की शिक्षा का उद्देश्य आत्मिक विकास के साथ-साथ जीवन की आवश्यकताओं के बारे में व्यावहारिक ज्ञान देना था। उसका नौकरी और वेतन आदि से कोई किसी प्रकार का संबंध नहीं था।

मुस्लिम-काल में शिक्षा-

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

16वीं और 17वीं सदी के आते-आते तक पढ़ना-लिखना नौकरी के लिए होने लगा। यहीं से शिक्षा जीवन के लिए न होकर जीविका के लिए हो गई और भारतीय जन जीवन में एक काले पृष्ठ का प्रारंभ हुआ, जिसकी भीषणता दिनों-दिन बढ़ती गई और आज बेकारी के रूप में उसने भयंकर रूप धारण कर लिया है।

अंग्रेजी शासन में शिक्षा-

जब अंग्रेज लोग हिंदुस्तान में आए, तो अंग्रेजी राज्य के प्रारंभ में मैकाले साहब ने जिस शिक्षा पद्धति का श्रीगणेश किया, वह मुसलमानों की भांति ही अंग्रेजों के लिए एक बाबू वर्ग रूपी गुलाम समाज बनाने के लिए थी। मैकाले ने जी भर कर भारतीय साहित्य, संस्कृति और विज्ञान को कोसकर अपनी अल्पज्ञता का परिचय देते हुए कहा था- "हमारा उद्देश्य है कि - भारत के लोग रंग में तो भारतीय रहें, किंतु आचार - विचार, रहन-सहन, बोलचाल, खानपान और भाव संस्कार आदि सभी बातों में अंग्रेज बन जाने हैं।

गांधी जी संत और महात्मा के साथ-साथ अपने युग के एक उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ भी माने गए हैं। उन्होंने यह जान लिया था कि जब तक देश की शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन नहीं आएगा तब तक देश स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ नहीं आँक सकेगा। उन्होंने इसमें गरीब-अमीर, छोटे-बड़े, सबको समान मानते हुए ऐसी न्याय पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का चित्र खींचा कि जिसमें बड़े होने पर हर एक को स्वतंत्र जीवन और जीविका के प्रमाणिक साधनों में विश्वास बना रहे। जिस देश के नौजवानों में जीविका की प्रमाणिकता पर से विश्वास उठ जाता है, जो मानने लगते हैं कि सच्चाई से जीवन नहीं चल सकता। उस देश का नैतिक पतन अवश्यंभावी हो उठता है। उन्होंने इस नई शिक्षा को प्रारंभ करते समय इसे लोकतंत्रीय सामाजिक उद्देश्य के लिए शैक्षणिक अभिव्यक्ति के रूप में पहचानकर ही देश के सामने कहा था- 'अगर मेरा बस चले, तो मैं कॉलेज की शिक्षा को जड़ मूल से बदल दूँ और उसे देश की आवश्यकताओं के साथ जोड़ दूँ।'

अवस्था अनुसार वर्गीकरण- बुनियादी के पहले पूर्व बुनियादी शिक्षा की योजना बनाई गई। बुनियादी उत्तीर्ण कर लेने पर आगे क्या पढ़ाया जाए, इसके लिए उत्तर बुनियादी और उत्तम बुनियादी के शिक्षा-क्रम सोचे गए।

1. **पूर्व बुनियादी शिक्षा** –

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

गर्भावस्था में माता के विचार, बोलचाल, रहन-सहन, खान-पान आदि का बालक पर असर पड़ता है। इस प्रकार पूर्व बुनियादी शिक्षा का आरंभ गर्भावस्था से लेकर जन्म तक, जन्म से ढाई वर्ष तक, ढाई वर्ष से चार और चार से सात वर्ष तक माना जाता है। घर की माताओं या शिक्षकों को अपने मन में बच्चों को सिखाने वाले विषयों का स्मरण रखना चाहिए। जैसे- कार्य संगठन, सफाई, स्वास्थ्य, प्रकृति का अभ्यास, बागवानी और पालतू जानवरों की देखरेख, बातचीत करने का ढंग और विचारों को व्यक्त करने की प्रभावोत्पादक पद्धति, संगीतः ताल और सुर, कला एवं दस्तकारी।1

2. **बुनियादी शिक्षा-**

इस शिक्षा क्रम में कताई, बुनाई, बढ़ई-गिरी, खेती, फल, साग-सब्जी पैदा करना, चमड़े का काम आदि उद्योग की दृष्टि से मुख्य माना गया। इसके अतिरिक्त स्थानीय दृष्टि से जो उद्योग शिक्षा का माध्यम बन सके, उन्हें अपनाने की पूरी आजादी रखी गई।

3. उत्तर बुनियादी शिक्षा-

सन् 1945 के राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में बुनियादी शिक्षा से आगे की शिक्षा पर विचार किया गया और निम्न उद्योगों के माध्यम से ही शिक्षा देने की सिफारिश की गई-

कृषि, बागवानी ,मधुमक्खी पालन, गो-पालन, तेलघानी, साबुन बनाना, लकड़ी तथा अन्य वस्तुओं का काम, मकान बनाना और देहाती इंजीनियरिंग, बुनाई, सिलाई, रसोई।

ऊपर बताए गए उद्योगों के माध्यम से निम्न प्रकार ज्ञान मिले ऐसी कल्पना की गई- मातृभाषा और राष्ट्रभाषा में भाषण सुनना और उनका सारांश लिखना, अपने काम की किताबें पढ़ना और लिखना तथा उनके संकेत (नोट्स) तैयार करना। रोजनामचा रखना, विद्यालय की पत्रिका में लिख देना व लेखों का संपादन करना आदि।

4. उत्तम बुनियादी शिक्षा-

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

उत्तर बुनियादी के बाद उत्तम बुनियादी के लिए निम्नलिखित विषय चुने गए- खेती, बागवानी और इससे सम्बद्ध उद्योग, पशुपालन व दुग्ध-विद्या, आहार-शास्त्र और पोषण-शास्त्र, ग्रामोद्योग और वस्त्र-विद्या, ग्राम-स्वास्थ्य, ग्राम-शिक्षा, देहाती इंजीनियरिंग।

इसमें प्रथम तीन विभागों का संबंध राष्ट्र की अन्न समस्या से है और हमारे राष्ट्र की 85 प्रतिशत जनता इन्हीं उद्योगों के द्वारा जीवन निर्वाह करती है। आहार-शास्त्र और पोषण-शास्त्र में अन्न उत्पत्ति के बाद उसके संरक्षण की विधि आती है। उसे इस प्रकार भौगोलिक ढंग से पकाना, जिससे इसका अधिक से अधिक लाभ उठाया जा सके तथा इसके खाद्य तत्वों की कम से कम हानि हो, इसी शास्त्र का अंग है। आहार शास्त्र के सिद्धांत, रसोई और अन्य संरक्षण की विभिन्न कलाएं तथा इनसे सम्बद्ध विज्ञान, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र यह सब इसी विभाग में प्रयोग और खोज के विषय माने गए हैं।

गांधीजी के शिक्षा संबंधी कुछ मुख्य विचार –

1. शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तए' है अर्थात विद्या द्वारा बालक को अपनी मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए मुक्ति शब्द के आध्यात्मिक और भौतिक दोनों अर्थ किए जा सकते हैं।

2. जब तक व्यक्ति की आजीविका का प्रश्न हल न हो तब तक यह देश सिद्ध नहीं हो सकता अर्थात जिस हेतु से भी बालक की शिक्षा अक्षर ज्ञान द्वारा नहीं परंतु उद्योग द्वारा होनी चाहिए।

3. उद्योग और शिक्षा पद्धति का निश्चय करने में हम 10 प्रतिशत लोगों को भी 90 प्रतिशत लोगों का ख्याल रखना चाहिए।

4. बहुत छोटे बालकों की शिक्षा का आरंभ स्वच्छता की शिक्षा से होना चाहिए और अक्षर लिख आने से पहले उन्हें चित्रकला (ड्राईग) सिखाना चाहिए। बालक के हाथ में कलम या पेंसिल रखने में देर लगे तो उसमें बुराई नहीं है, परंतु जब तक उसका अज्ञान रहना जरूरी है, अनेक प्रश्नों का ज्ञान उसे जवाबी देना चाहिए।

5. शिक्षा का माध्यम स्वभाव अनुसार ही होना चाहिए।

The Asian Thinker

Year-6 Volume: III, July-September, 2024 Issue-23ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

6. इतिहास में हमें अधिकतर राजवंशों की उथल-पुथल लड़ाइयां बगैरह ही पढ़ाई जाती है। मानव जीवन में यह चीजें प्लेग या हैजे की तरह कभी-कभी फूट निकलने वाली बीमारियां हैं। वह कोई मनुष्यों का नित्य जीवन नहीं है। उनका नित्य जीवन तो अहिंसात्मक समाज संगठन द्वारा चलता है और उसी के द्वारा मनुष्य जाति ने अपना अब तक का विकास किया है, इतिहास द्वारा जिस विकास क्रम का ज्ञान होना चाहिए।

7. मातृभाषा सेवा और संगीत पर गांधीजी बहुत जोर देते हैं।

'रचनात्मक' शब्द बहुत चलता है। जिसको जो करना होता है, उसी को रचनात्मक कहकर वह पेश करता है। गाँधीजी ने जो एक नयी भाषा हमें दी, उससे कठिनाई भी कुछ बढ़ी है। व्यवहार नैतिक शब्दों को जोड़कर चलाया जाने लगा है। इस वजह से यहाँ तक कहा जाता है कि जहाँ अंदर पाप हो, वहाँ मुँह पर धर्म पाओगे; जहाँ भीतर घात हो, वहाँ ऊपर मिठास होगी। यानी आदर्शवाद और नीतिवाद जहाँ है वहाँ ढकोसला है, ऐसा प्रवाद हो गया है। यह कठिनाई बढ़ तो गयी है। कारण, संशय और अविश्वास बढ़ गया है। फिर भी उसे पार करना है, इतने मात्र से रचनात्मक शब्द और काम से पिंड छुड़ा नहीं लेना है। रचनात्मक वह है जो-

1. श्रम से पदार्थ की उत्पत्ति या निर्माण करें,

2. आपस में सहयोग साधे और उसकी बाधा को हटाये।

दूसरी कोटि का काम भावना और प्रचार का है। जात-पाँत और रंग-रीत का भेद, ऊँच-नीच का विचार अपने-अपने धर्म का अभिमान, ये और ऐसी बातें सहयोग के फैलाव में रुकावट होती हैं। इसी से ये फिर स्वार्थों के पोषण में सहायक होती हैं। इन्हें गिराना और जीतना होगा।

परन्तु मूल रचनात्मक है वह जहाँ श्रम में से पदार्थ फलता है। इसके बिना भावना-प्रचार का काम भी बेजान रहता है, ठोस नहीं हो पाता। प्रेम का प्रचार किसने नहीं किया? साहित्य ने किया, धर्म नहीं किया, सब समझदारों ने किया। पर उस प्रेम के नीचे स्वार्थ भी मजे में पलता गया। जिस प्रेम में अपनी और अपने की कुर्बानी हो, वह प्रेम तो बिरलों के हाथ आया। अधिकतर वह भावना में समाकर और सुखकर रह गया, और व्यवहार को अछूता छोड़ गया। नतीजा यहाँ तक की धनी की धर्मी दीखने को शेष रहा। यानी, भावना को श्रम में उतारे बिना बात पूरी बनती नहीं। भावना तक बात व्यक्तिगत रहती है, कर्म

में उतरकर ही वह सामाजिक रूप लेती है। भावना एकाकी है, कर्म सहयोगी। भक्त श्रमिक न हो तो हो सकती है कि उसकी भक्ति उत्कट दीखे, पर भव-बन्ध काट न सके। वह असामाजिक भी हो सकती है; कारण, वह अनुत्पादक हो रहती है। अब व्यक्ति पदार्थ को उपयोग में लाये बिना, और इस तरह उसे चुकाये बिना, तो रह नहीं सकता। वह खाता है और कुछ-न-कुछ रखता और पहनता है। तो पदार्थ उपजाने में भी उसका भाग होना चाहिए। श्रम से छूटकर भक्ति मानो इस कर्तव्य से भी छूट जाती है। तब वह नैतिक की जगह शायद कुछ भावुक भी हो जाती होगी। भावुकता अनजाने अपने नीचे एक विशेष प्रकार की निर्ममता की धरती बचा छोड़ती है। यहाँ सामाजिकता की जड़ शेष रहती है और वह कटती नहीं, बल्कि अंदर-ही-अंदर फैलती रहती है। ऐसे व्यक्ति में और समाज में घोर द्वंद पैदा हो जाता है। तपस्वी स्खलित होता है और भक्त मालदार बनता है।

इस प्रकार रचनात्मक में मुख्य सार है यज्ञार्थ किया गया उत्पादक श्रम। उत्पादक का मतलव है वैज्ञानिक। केवल श्रम से नहीं चलेगा। न इतना काफी है कि वह श्रम कुछ तो भी उपजा दे। नहीं, उसमें वैज्ञानिक व्यवसाय-बुद्धि को भी लगाना होगा। तब वह सही मानों में रचनात्मक हो सकेगा।

‘उत्पादन की प्रक्रिया से व्यक्तित्व के विकास का अर्थ यह है कि मनुष्य खो न जाए। उसकी विभूति का विकास होना चाहिए। मनुष्य की विभूति के तीन अंग है- श्रम, कला और बंधुत्व या सहानुभूति। इन तीनों का विकास उत्पादन से होना चाहिए।’

निष्कर्ष:

इस प्रकार मनुष्य विभूति बन गया, धरती विभूति बन गयी, सृष्टि विभूति बन गयी, और समय विभूति बन गया। यह जीवन का ’सर्वोदय-दर्शन’ कहलाता है। सर्वोदय-दर्शन का अर्थ यह हैकि जितनी वस्तुएं हैं, वे सब हमारे जीवन की विभूतियाँ बनेंगी। ऐसा नहीं होगा, तो सभी जगह संघर्ष होगा। विज्ञान की ’मनुष्य ने प्रकृति पर कैसे विजय पायी’ नामक अंग्रेजी पुस्तक में पढ़ा था कि सृष्टि से लड़ाई में जीतो। जमाने से लड़ाई है, उसे भी जीतो। मनुष्य से लड़ाई है उसे भी जीतो। अपने से लड़ाई है,

तो उसे भी जीतो। जहाँ देखो वहाँ लड़ाई ही लड़ाई दीखती है। जीवन की विभूति बनकर कोई नहीं आता। और यहाँ सर्वोदय में सर्वत्र सामंजस्य की सामंजस्य है।

गांधी की महिमा तो रूप में अनंत है। उसको देखे जाइए, गाये जाइए- भला कहीं उसकी थाह है, कहीं अंत है? इसलिए इस विभूतिमय में जीवन के ऐश्वर्य में नहीं जाना है। उसकी निपटता को ही जान और पहचान लेना है। वह है, हर समय की हर क्षेत्र और हर समस्या के लिए सत्य और अहिंसा में से समाधान प्राप्त करने की प्रतिज्ञा और तत्परता।

गाँधी और कुछ नहीं मानवता के इसी अंतरस्वरूप का प्रतिनिधि है। मनुष्य जाति का अंतर्मन है, वाणी है, अंतर ध्वनि है। उसे कुचल कर लड़ा जा सकता है, उसको टाला जा सकता है, अनसुना किया जा सकता है। पर अन्त में उससे सुलटना ही होगा। उससे अपना हिसाब साफ किए बिना गति नहीं। इसमें कितने भी दिन लगे परन्तु बुद्धिमान यही है।

सन्दर्भ सूची:

- आचार्य,नरेन्द्रदेव. (2002).*राष्ट्रीयता और समाजवाद*. नेशनल बुक ट्रष्ट:नई दिल्ली.
- कुमार, क. (2006). *गुलामी की शिक्षा और राष्ट्रवाद* .ग्रन्थ शिल्पी: नई दिल्ली.
- शर्मा, एच.सी.(2007).*राष्ट्रवाद और राष्ट्र निर्माण: सिद्धांत एवं प्रक्रिया*. ओमेगा पुब्लिकेशन्स: नई दिल्ली.
- कृष्णमूर्ति, जे.(2019). *शिक्षा क्या है?* राजपाल प्रकाशन: नई दिल्ली.
- https://www.studyiq.com/articles/role-of-education/
- https://vidyaprakashan.com/
- https://blog.mygov.in/

The Asian Thinker